डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 08/08/2020

Page No.:

विषय - संस्कृत, बी॰ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
~~किरातार्जु~~ प्रथमवर्ष, प्रथम पत्र
किरातार्जुनीयम् - प्रथम सर्ग

वसूनि वाञ्छन्न वशी न मन्युना
स्वधर्म इत्येव निवृत्तकारणः ।
गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा
निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम् ॥13॥

अन्वयः- वशी सः वसूनि वाञ्छन् न, मन्युना न, (किन्तु) निवृत्तकारणः (सन्) स्वधर्मः इत्येव गुरूपदिष्टेन दण्डेन रिपौ सुते अपि वा (स्थितं) धर्मविप्लवं निहन्ति ।

भाषार्थ- (वशी सः) इन्द्रियों को वश में रखने वाला वह दुर्योधन (वसूनि वाञ्छन् न) धन प्राप्त करने की इच्छा से नहीं, और (मन्युना न) नहीं क्रोध के कारण दण्ड देता है, अपितु (निवृत्तकारणः (सन्) स्वधर्मः इत्येव) बिना किसी कारण के ही यह मेरा धर्म है, ऐसा मानकर (गुरूपदिष्टेन दण्डेन) गुरुओं (धर्मशास्त्रकारों) के उपदेश के अनुसार दण्ड देकर (रिपौ सुते अपि वा) शत्रु के और पुत्र के भी (धर्मविप्लवं निहन्ति) धर्मोल्लंघन का निवारण करता है।

भावार्थ- इस पद्य में दुर्योधन की दण्डनीति का एवं निष्पक्ष न्यायप्रियता का उल्लेख है। अपराध करने पर शत्रु या स्वयं अपने पुत्र को भी वह दण्ड देता है।

टिप्पणी - प्रथम चरण में 'न' की कई बार आवृत्ति होने से वृत्त्यनुप्रास है।

Scanned with CamScanner

Date __/__/__

Page No.:

पदव्याख्या – वशी = इन्द्रियों को वश में रखने वाला, जितेन्द्रिय। वशः अस्ति अस्येति, वशी = वश + इनि। वसूनि वाञ्छन् न = धन चाहते हुए न, वसु = धन, 'वसु तोये धने मणौ' – वैजयन्ती। वाञ्छन् = वाञ्छ् + शतृ। अर्थात् लोभ से प्रेरित होकर नहीं। मन्युना न = क्रोध से नहीं, क्रोध के वशीभूत होकर नहीं। मन्यु = क्रोध 'मन्युर्दैन्ये क्रतौ क्रुधि' अमरकोष।
स्वधर्म इति स्व = अपना धर्म है, ऐसा ही समझकर, राजधर्म मानकर, कर्तव्य समझकर (धन के लोभ या क्रोध से प्रेरित न होकर बल्कि कर्तव्य बुद्धि से)। स्वस्य धर्मः स्वधर्मः (ष० तत्पु०)। निवृत्तकारणः = बिना कारण के। निवृत्तं कारणं यस्य सः (बहु०)। निवृत्त = नि + वृत् + क्त (कर्तरि)। कारणम् = कृ + णिच् + ल्युट् (सः का विशेषण)।
गुरूपदिष्टेन = गुरु द्वारा निर्दिष्ट (दण्डेन का विशेषण। गुरुभिः उपदिष्टः गुरूपदिष्टः (तृ०तत्पु०) तेन। उपदिष्टः = उप + दिश् + क्त (कर्मणि)। रिपौ = शत्रु में, 'रिपौ वैरि सपत्नारिद्विषद्द्वेषणदुर्हृदः' अमरकोषः। सुतेऽपि वा = अथवा अपने पुत्र में भी। आधारे सप्तमी। सः धर्मविप्लवं दण्डेन निहन्ति = वह धर्म के उल्लंघन को दण्ड से रोकता है। धर्मविप्लवम् = धर्मस्य विप्लवः धर्मविप्लवः (ष० तत्पु०), तम्। धर्म के व्यतिक्रम को। वि + प्लु + अप् (भावे) दण्डेन – दमन करके, ताडना द्वारा। निहन्ति = विनाश करता है। रोकता है। नि + हन् + लट्।

Jawaharlal Nehru

Scanned with CamScanner

Date ___/___/______ Page No.: ________

तुलना - मनु० 8।335 -

पिताचार्यः सुहृन्माता भार्या पुत्रः पुरोहितः ।
नादण्ड्यो नाम राज्ञोऽस्ति यः स्वधर्मे न तिष्ठति ॥

Scanned with CamScanner